

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव: व्याख्यान 13बी

भविष्यसूचक लेखों की व्याख्या के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

5. ई. यशायाह 11:10-12 ओसवाल्त का दृष्टिकोण

आइए यशायाह पर जॉन ओसवाल्त की एनआईसीओटी टिप्पणी, पृष्ठ 286 और उसके बाद देखें। वे इस बड़े खंड के बारे में कहते हैं, “हालांकि इन छंदों का सामान्य अर्थ स्पष्ट है, लेकिन विशिष्टताएँ इतनी स्पष्ट नहीं हैं। क्या भविष्यवक्ता 539 ईसा पूर्व में बेबीलोन से वापसी की बात कर रहा है?” देखिये, यह शुरू होता है, “प्रभु अपने लोगों के बचे हुए अवशेषों को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाएगा।” फिर वह पद 12 में इस्राएल के बंधुओं को इकट्ठा करने, उन्हें उनकी भूमि पर वापस लाने की बात करता है। ओसवाल्त कहते हैं, “क्या यह 539 में बेबीलोन से वापसी की बात कर रहा है? यदि ऐसा है, तो मसीहा अभी तक प्रकट नहीं हुआ था और शायद ही वह ध्वज हो सकता था जिसके चारों ओर लोग एकजुट हुए थे। हम पद 10 में देखते हैं, “उस दिन यिश्शै की जड़ देश देश के लोगों के लिये झण्डा ठहरेगी। राष्ट्र उसके पास जुटेंगे।” वनवास से वापसी के समय ऐसा होता नहीं दिख रहा था. क्या यशायाह वास्तव में नए इज़राइल, चर्च की बात कर रहा है, जैसा कि सुधारक कहते हैं? उदाहरण के लिए, केल्विन कहते हैं, “निश्चित रूप से, विश्वासियों को दुनिया के हर हिस्से से मसीहा के लिए इकट्ठा किया गया था [ईजे यंग की भी यही स्थिति है]।” और श्लोक 10, यशायाह 2:2-4 की याद दिलाते हुए, अलग-अलग राष्ट्रों का संदर्भ देता है। फिर भी, यहां ओसवाल्त की टिप्पणी दिखाई देती है, “परिच्छेद का प्राथमिक ध्यान इज़राइल के ऐतिहासिक राष्ट्र पर लगता है, जिससे किसी को विश्वास हो जाता है कि यह यहूदी लोगों के कुछ महान अंतिम एकीकरण की ओर इशारा करता है जैसे कि पॉल द्वारा संदर्भित रोमियों 11. यदि यह ज़ायोनी आंदोलन में शुरू हुआ है, जैसा कि कई लोग मानते हैं, तो हम यहूदी राष्ट्र द्वारा मसीह में ईश्वर की ओर मुड़ने में इसके अंतिम समापन की आशा कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि ओसवाल्त, जैसा कि वह आगे चर्चा करता है, वास्तव में उस तीसरी श्रेणी में फिट होगा जो आपके यहां है; निर्वासित इस्राएल की अपनी भूमि पर वापसी और उसके मसीह के पास आने

के संबंध में किसी प्रकार का वर्णन। वहां वह पंक्ति अस्पष्ट हो सकती है जिसे एक मिनट पहले लाया गया था।

एफ। जेए अलेक्जेंडर का दृष्टिकोण

यशायाह पर जेए अलेक्जेंडर की टिप्पणी में, पृष्ठ 257, वे कहते हैं, “भविष्यवाणी सन्हेरीब की असुविधा के बाद शरणार्थियों की वापसी में पूरी नहीं हुई, न ही बेबीलोन से वापसी में, और आंशिक रूप से यहूदियों को सुसमाचार के उपदेश में। पूर्ण पूर्ति की उम्मीद तब की जाएगी जब संपूर्ण इस्राएल को बचाया जाएगा। भविष्यवाणी को आलंकारिक रूप से समझा जाना चाहिए, क्योंकि इस श्लोक में वर्णित राष्ट्रों का अस्तित्व बहुत पहले ही समाप्त हो चुका है। वहां देखिए, आपको वह सांस्कृतिक रूप से आक्रमणकारी शब्दावली मिलती है। केइल के अनुसार, पूर्वकल्पित घटना फ़िलिस्तीन में यहूदियों की वापसी है; लेकिन केल्विन के अनुसार पश्चाताप और ईसाई धर्म को अपनाने पर मसीह के राज्य में उनका प्रवेश।”

तो आपको दृष्टिकोण का वह विचलन मिलता है। श्लोक 14, जहां फ़िलिस्तीन, एदोम, मोआब और मोआबियों का उल्लेख है, सिकंदर कहता है, “सभी नाम पड़ोसी देशों के हैं जिनके साथ इब्री युद्ध करने के आदी थे। एदोम, मोआब और अम्मोन का नाम विशेष रूप से एक अतिरिक्त कारण से लिया जा सकता है, अर्थात् वे लगभग इज़राइल से संबंधित थे, और फिर भी उसके सबसे कट्टर दुश्मनों में से एक थे। यहूदी इसे उन देशों के संबंध में एक शाब्दिक भविष्यवाणी के रूप में समझते हैं जो पहले यहां सूचीबद्ध जातियों के कब्जे में थे। अधिकांश ईसाई लेखक सच्चे धर्म द्वारा प्राप्त की जाने वाली विजय को आध्यात्मिक रूप से समझते हैं, और मानते हैं कि यहाँ जिन राष्ट्रों का नाम रखा गया है वे सामान्यतः दुश्मनों के लिए, या बुतपरस्त दुनिया के लिए रखे गए हैं। ध्यान दें कि यह यंग का भी दृष्टिकोण है। “वर्णन की इस पद्धति को उन ऐतिहासिक संघों द्वारा अधिक सशक्त बनाया जा रहा है जिन्हें नाम जागृत करते हैं।” बाद में, वह कहते हैं, “बाबुल से वापसी में, सुसमाचार की सामान्य प्रगति में, और यहूदियों की भविष्य की बहाली में, विभिन्न व्याख्याकारों द्वारा पूर्ति की मांग की गई है।”

जी। वन्नॉय का दृष्टिकोण मुझे समझ नहीं आता कि आप बेबीलोन से वापसी के विवरण के साथ कैसे बहस कर सकते हैं, लेकिन आप इससे क्या करते हैं? क्या यह सुसमाचार की सामान्य प्रगति है? क्या आप इसका आध्यात्मिकरण करते हैं? या क्या आप कहते हैं कि इसका भविष्य में यहूदी लोगों की उनकी मातृभूमि में बहाली से कुछ लेना-देना है?

मैं अपने युगान्त विज्ञान में अधिक पूर्व-सहस्राब्दी हूँ। मैं उस बाद वाले दृष्टिकोण को अपनाने और इन नामों के साथ, स्थानों के लिए कुछ प्रकार के समकक्षों की तलाश करने के लिए अधिक इच्छुक हूँ। यदि वे असीरिया से - क्षेत्र में मेसोपोटामिया से लौटने वाले हैं, तो संबंधित समकक्षों की तलाश करें। मुझे नहीं लगता कि ऐसे बहुत से लोग हैं, लेकिन कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि अंत समय में इन सभी राष्ट्रों का पुनर्गठन होने जा रहा है, कि अंत समय में एक असीरिया बनने जा रहा है। मुझे लगता है कि यह इसे आगे बढ़ा रहा है, आप देखते हैं कि यह पहली श्रेणी होगी, जो शाब्दिक पूर्ति पर जोर देते हैं। मुझे लगता है कि आप दूसरी या तीसरी श्रेणी में आ गये हैं। सवाल यह है कि क्या आप आध्यात्मिकरण व्याख्या से सहज हैं? क्या इसे इसी तरह समझने का इरादा था?

जेए मोती द्वारा यशायाह पर एक अच्छी टिप्पणी है। आपमें से कुछ लोग इससे परिचित हो सकते हैं। इस परिच्छेद पर उनकी संक्षिप्त टिप्पणी है, "यह एक रूपक है: जिस शक्ति के आगे राष्ट्र गिरते हैं वह सुसमाचार है।" इसलिए, वह यंग से सहमत होंगे। मैं इसका उपयोग केवल उन प्रकार के व्याख्यात्मक प्रश्नों को दर्शाने के लिए करने का प्रयास कर रहा हूँ जो तब उत्पन्न होते हैं जब आप अधिक बारीकी से देखना शुरू करते हैं और इस पूर्वानुमानित भविष्यवाणी को देखते हैं।

6. भविष्यसूचक भविष्यवाणी सशर्त हो सकती है

। जेर. 18:5-10

आइए 6 पर चलते हैं, "भविष्यवाणी करने वाली भविष्यवाणी सशर्त हो सकती है।" अब, कहने का मतलब यह है कि कुछ भविष्यवाणियाँ परिस्थितियों पर निर्भर हो सकती हैं। स्थिति व्यक्त की जा सकती है और फिर यह समस्याग्रस्त नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि

ऐसे उदाहरण हैं जहां इसे व्यक्त नहीं किया गया है, फिर भी यह भविष्यवाणी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जो पाठ मुझे लगता है कि इसे समझने में अत्यधिक महत्वपूर्ण है वह यिर्मयाह 18:5-10 है। यिर्मयाह 18 में, यिर्मयाह कुम्हार के घर जाता है, उसे कुछ बर्तन फेंकते हुए देखता है, और श्लोक पांच में, "यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा और कहा, 'हे इस्राएल के घराने, क्या मैं तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर सकता जैसे कुम्हार करता है? जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्टी होती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तुम मेरे हाथ में हो। यदि..." और यहां महत्वपूर्ण कथन हैं, "यदि किसी भी समय मैं घोषणा करता हूं कि किसी राष्ट्र या साम्राज्य को उखाड़ फेंकना है, तोड़ देना है, नष्ट कर देना है, और यदि उस राष्ट्र को मैंने चेतावनी दी है कि वह अपनी बुराई पर पश्चाताप करता है, तो मैं नरम हो जाऊंगा और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा इस पर मैंने जिस विपत्ति की योजना बनाई थी। यदि किसी अन्य समय, मैं घोषणा करता हूं कि एक राष्ट्र या राज्य का निर्माण और रोपण किया जाना है, और यदि वह मेरी दृष्टि में बुरा करता है और मेरी बात नहीं मानता है, तो मैं उसके लिए जो अच्छा करने का इरादा रखता था उस पर पुनर्विचार करूंगा। इसलिए, ईश्वर एक बयान दे सकता है, लेकिन अगर उस व्यक्ति या समूह के आचरण को संशोधित किया जाता है, जिसके लिए वह बयान निर्देशित है, तो इससे ईश्वर ने शुरू में कहा था कि वह क्या करेगा, इसके क्रियान्वयन पर असर पड़ सकता है।

बी। 1 राजा 11 - यारोबाम

जब आप भविष्यसूचक कथनों पर आते हैं, तो कभी-कभी आपको शर्तें जुड़ी हुई मिलती हैं। यारोबाम प्रथम के साथ 1 राजा 11 को देखें। श्लोक 38 को देखें। अहिय्याह भविष्यवक्ता, प्रभु की ओर से बोलते हुए, पद 38 में उससे कहता है, "यदि तू जो कुछ मैं तुझे आज्ञा देता हूं वह कर, और मेरे मार्गों पर चले, और जो ठीक है वही करे।" मैं अपने दास दाऊद की नाई मेरी विधियों और आज्ञाओं का पालन करता रहूंगा, और मैं तेरे संग रहूंगा। मैं तुम्हारे लिये वैसा ही स्थायी राजवंश बनाऊंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये बनाया था, और इस्राएल तुम्हें सौंप दूंगा। मैं इसके कारण दाऊद के वंशजों को नीचा दिखाऊंगा, परन्तु हमेशा

के लिए नहीं।”

परन्तु एक शर्त है: यदि तुम वह सब करोगे जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तो मैं यारोबाम का एक पक्का घर बनाऊंगा जैसा मैंने दाऊद के लिए किया था। इसके साथ एक शर्त है और चूँकि यारोबाम ने शर्तें पूरी नहीं कीं, इसलिए वह भविष्यवाणी भी पूरी नहीं हुई। पक्का मकान देने के बजाय उसका मकान उजाड़ दिया गया।

आप 1 राजा 15:29 पर जाएँ और आप वहाँ पढ़ेंगे, “जैसे ही उसने [अर्थात् बाशा] शासन करना आरम्भ किया, उसने यारोबाम के पूरे परिवार को मार डाला। उसने यारोबाम के किसी भी प्राणी को नहीं छोड़ा, परन्तु यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने अपने दास शिलोवासी अहिय्याह को दिया था, सब को नष्ट कर दिया, क्योंकि यारोबाम ने पाप किए थे और इस्राएल से भी पाप कराए थे, क्योंकि उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाया था। ” इसलिए यारोबाम ने शर्त पूरी नहीं की और उसे एक निश्चित राजवंश की स्थापना के बजाय न्याय का अनुभव हुआ। लेकिन यह बिल्कुल सीधा है, यह एक बताई गई शर्त है।

सी। 1 राजा 21:19-27 अहाब आइए एक अघोषित स्थिति को देखें लेकिन जो अभी भी भविष्यवाणी में शामिल प्रतीत होती है। 1 राजा 21:19 को देखें। यह अहाब द्वारा नाबोत के अंगूर के बगीचे पर कब्ज़ा करने के संदर्भ में है। यहोवा ने एलिय्याह से कहा कि वह अहाब से कहे, “यहोवा यों कहता है, 'क्या तू ने किसी मनुष्य की हत्या करके उसकी सम्पत्ति नहीं छीन ली है?' तब उस से कह, यहोवा यों कहता है, जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लोहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तुम्हारा लोहू चाटेंगे। हां, आपका।” तो एक भविष्यवाणी है लेकिन अहाब ने कम से कम कुछ हद तक पश्चाताप किया।

पद 27 को देखें, “जब अहाब ने ये बातें सुनीं, तब उस ने अपने वस्त्र फाड़े, टाट ओढ़ लिया, और उपवास किया। वह टाट ओढ़कर लेटा और नम्रतापूर्वक घूमता रहा। तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा, क्या तू ने देखा, कि अहाब मेरे साम्हने कैसे दीन हो गया है? क्योंकि उस ने अपने आप को दीन किया है, मैं उसके दिन में यह विपत्ति न लाऊंगा। परन्तु मैं इसे उसके बेटे के दिनों में उसके घर ले आऊंगा।” इसलिए निर्णय संशोधित

किया गया है। इसे पूरी तरह से हटाया नहीं गया है, लेकिन इसके अधिनियमन का समय तत्व उसके बेटे के समय में बदल दिया गया है।

आपने इसे 2 राजा 9:25 और 26 में पढ़ा, अहाब के पुत्र योराम के समय में। उसे येहू ने मार डाला। 2 राजा 9:25, "येहू ने अपने रथ सरदार बिदकर से कहा, '[जोराम] को उठाकर यिज़्ज़ेली नाबोत के खेत में फेंक दो। याद करो जब यहोवा ने उसके बारे में यह भविष्यवाणी की थी तो तुम और मैं उसके पिता अहाब के पीछे एक साथ रथों पर कैसे सवार होते थे। 'कल मैंने नाबोत और उसके पुत्रों का खून देखा, यहोवा की यही वाणी है, और मैं निश्चय इसी भूमि में तुम से उसका बदला चुकाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है।' अब, प्रभु के वचन के अनुसार, उसे उठाओ और उस भूखंड पर फेंक दो।" तो यहां अहाब पर आने वाले फैसले के बारे में एक भविष्यवाणी है जिसे अहाब के पश्चाताप के कारण संशोधित किया गया था लेकिन उसके समय में लागू किया गया था। बेटा यहोराम बिल्कुल वैसा ही जैसा कि इसकी भविष्यवाणी की गई थी। एक अघोषित स्थिति थी।

डी। योना शायद आपकी भी योना जैसी ही स्थिति हो। योना नीनवे आता है, और अध्याय 3 पद 4 में वह बयान देता है, "40 दिनों में, नीनवे को उखाड़ फेंका जाएगा।" नीनवे ने पश्चाताप किया और उसके संदेश का उत्तर दिया। नीनवे को 40 दिनों में नहीं उखाड़ फेंका गया। अंततः, नीनवे को नष्ट कर दिया गया , लेकिन यह योना के समय के बहुत बाद था।

इ। यशायाह 38 - हिजकिय्याह

यशायाह 38:1-5 को देखें। आपने वहाँ पढ़ा, "उन दिनों हिजकिय्याह बीमार हो गया और मरने पर था। आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, आपके घर को व्यवस्थित कर, क्योंकि तू मरने पर है; तुम ठीक नहीं होओगे।' हिजकिय्याह ने दीवार की ओर मुंह करके यहोवा से प्रार्थना की, 'हे प्रभु, स्मरण रख, कि मैं किस प्रकार तेरे साम्हने पूरे मन से भक्ति करके चलता आया हूं, और जो तेरी दृष्टि में अच्छा है वही किया है।' और हिजकिय्याह फूट फूट कर रोने लगा। तब यहोवा का यह वचन यशायाह

के पास पहुंचा, कि जाकर हिजकिय्याह से कह, तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी, और तेरे आंसू देखे हैं; मैं तुम्हारे जीवन में पन्द्रह वर्ष जोड़ दूँगा। और मैं तुझे और इस नगर को अशूर के राजा के हाथ से बचाऊँगा। मैं इस शहर की रक्षा करूँगा।" तो हिजकिय्याह को की गई घोषणा पर, "तुम मरने वाले हो, तुम ठीक नहीं हो पाओगे," हिजकिय्याह प्रभु से प्रार्थना करता है और प्रभु जवाब देते हैं और उसे अतिरिक्त 15 वर्ष देते हैं . तो ऐसा प्रतीत होता है कि कई मामलों में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी से यह सशर्त प्रकृति हो सकती है।

मुझे लगता है कि यही दो चीजें हैं जो सामने आती हैं। मैं पश्चाताप और प्रार्थना के अलावा दूसरों के बारे में नहीं सोच सकता , जो इसके पश्चाताप वाले हिस्से को फिर से पुष्ट करता है। यिर्मयाह 18:5-10 स्पष्ट रूप से प्रार्थना के बारे में बताता है, और आपके पास अन्य उदाहरण भी हैं जब मूसा ने इस्राएल के लिए मध्यस्थता की थी। जब प्रभु कहते हैं कि वह एक काम करने जा रहे हैं, तो मूसा प्रार्थना करते हैं और प्रभु नरम पड़ जाते हैं।

एफ। सशर्तता पर जे. बार्टन पायने जेबी पायने अपने *बाइबिल भविष्यवाणी के विश्वकोश में*, एक बड़े परिचयात्मक खंड में, भविष्यवाणी सामग्री की व्याख्या के कई मुद्दों पर चर्चा करते हैं। वह बाइबिल की भविष्यवाणी की सशर्तता के इस मुद्दे पर चर्चा करता है। उस चर्चा में, उन्होंने सुझाव दिया कि सशर्तता पर कुछ सीमाएँ लगाई जानी चाहिए, ऐसा न हो कि सभी भविष्यवाणियाँ पूरी होने में अनिश्चित हो जाएँ। हम देखते हैं कि इसके पीछे व्याख्यात्मक खतरा है। यदि सब कुछ सशर्त है, तो आप निश्चित नहीं हो सकते कि कुछ भी होने वाला है, विशेष रूप से वे चीजें जो ईश्वर के मुक्ति कार्यक्रम के केंद्र में हैं। मुझे लगता है कि निश्चित रूप से इसमें एक अर्थ है, और पायने जो सुझाव दे रहा है, उसमें यह मेरा अतिरिक्त है, उत्पत्ति 12:3 में इब्राहीम से भगवान का वादा, "तेरे वंश में सभी राष्ट्र धन्य होंगे," किसी भी इंसान पर स्पष्ट रूप से सशर्त नहीं है इसकी पूर्ति सुनिश्चित करने के लिए किया जाएगा। यह निश्चित रूप से होने वाला है। इब्राहीम के वंश के माध्यम से पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद दिया जाएगा क्योंकि वह ईश्वर के मुक्ति उद्देश्य के केंद्र में है। मुझे लगता है कि ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे

कोई भी इंसान इसे बदलने के लिए कर सके।

पायने का सुझाव है, और यह उनका स्वयं का सूत्रीकरण है, कि किसी भविष्यवाणी को सशर्त बने रहने के लिए उसे दो योग्यताओं को पूरा करना होगा। एक, यह निकट अनुप्रयोग का होना चाहिए। यदि आप उदाहरणों को देखें, तो यह फिट बैठता है। योना ने नीनवे को उपदेश दिया, यशायाह ने हिजकिय्याह को बताया कि वह कब मरने वाला है, एलिय्याह ने अहाब को बताया कि वह कैसे मरेगा। यह एक निकट अनुप्रयोग होना चाहिए। दूसरा, इसमें पैगंबर के समकालीन को संतुष्ट करने में सक्षम तत्व होने चाहिए। दूसरे शब्दों में, ये सशर्त लंबी दूरी की भविष्यवाणियाँ नहीं हैं जो उनकी योजना और उद्देश्य की पूर्ति के अनुसार ईश्वर के मुक्ति कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का हिस्सा हैं।

तो, मुझे लगता है कि यह संभवतः मददगार है। मुझे लगता है कि हमें यह पहचानना चाहिए कि किसी भी भविष्यवाणी के माध्यम से एक संभावित सशर्त पहलू होता है, लेकिन जैसा कि सुझाव दिया गया है कि वे स्थितियाँ प्रार्थना और पश्चाताप हैं। भविष्यवाणी की एक समकालीनता है जिसे पैगंबर के समकालीनों द्वारा पूरा किया जा सकता है। यह दीर्घकालिक भविष्यवाणी के बजाय एक निकट अनुप्रयोग है।

7. भविष्यसूचक भविष्यवाणी के प्रकार a. प्रत्यक्ष भविष्यवाणी

आइये 7 पर चलते हैं, "भविष्य कहनेवाला भविष्यवाणी के प्रकार।" उस शीर्षक के तहत मेरे मन में जो बात है वह यह है कि जिसे आप प्रत्यक्ष भविष्यवाणी और टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी कह सकते हैं, उसके बीच का अंतर है। प्रत्यक्ष भविष्यवाणी में एक भविष्यवाणी कथन शामिल होता है जिसकी पूर्ति केवल भविष्य में होती है। दूसरे शब्दों में, यह भविष्य में होने वाली किसी बात का मौखिक दावा है। आप मीका 5:2 को देख सकते हैं, जो कहता है, "परन्तु हे बेतलेहेम एप्राता, यद्यपि तू यहूदा के कुलों में छोटा था, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक निकलेगा जो इस्राएल पर प्रभुता करेगा, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन काल से है, प्राचीन काल से।" फिर इसे मत्ती 2:5-6 में उद्धृत किया गया है, जो मसीह के साथ पूरा हुआ है, जो बेथलेहेम से बाहर आता है और इज़राइल का शासक बन जाता है। यह एक बयान है, एक मौखिक दावा

है।

बी। टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी

एक टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी को प्रत्यक्ष भविष्यवाणी से अलग किया जाता है। एक टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी एक संस्था, व्यक्ति या एक घटना है जो मोचन इतिहास में बाद की अवधि की किसी संस्था, व्यक्ति या घटना में अपने अर्थ का उच्चतम अनुप्रयोग पाती है। मैं उसे दोहराऊंगा. एक टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी एक संस्था, व्यक्ति या एक घटना है जो किसी संस्था, व्यक्ति या बाद के इतिहास में किसी घटना में अर्थ का उच्चतम अनुप्रयोग पाती है। उदाहरण के लिए, फसह का मेमना स्वयं मसीह में अपने अर्थ का उच्चतम अनुप्रयोग पाता है। या जंगल में खम्भे पर का साँप। दूसरे शब्दों में, टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी पूर्व-चित्रण या इमेजिंग द्वारा पूरी की जाती है।

1. टाइपोलॉजी पर जॉन स्टेक

के के अंतर्गत अपने उद्धरण पृष्ठ 24 को देखें। जॉन स्टेक की "बाइबिल टाइपोलॉजी कल और आज" के पहले पैराग्राफ में, वह कहते हैं, "दूसरे शब्दों में, एक प्रकार एक ऐतिहासिक वास्तविकता है जिसने अपने ऐतिहासिक क्षितिज के भीतर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उद्देश्य पूरा किया (केवल एक प्रतीकात्मक नहीं), बल्कि यह प्रोविडेंस द्वारा इसे इस तरह से भी तैयार किया गया था कि ईश्वर के बड़े उद्देश्य में योगदान दिया जा सके, अर्थात्, क्रमिक चरणों और संचालन में उन्हीं सत्यों और सिद्धांतों को प्रकट किया जा सके जिन्हें सुसमाचार की वास्तविकताओं में पूर्ण अभिव्यक्ति की ओर जाना था। तो उस अर्थ में, प्रकार भविष्यवाणी का कार्य करता है। यह प्रत्यक्ष भविष्यवाणी से भिन्न है, अर्थात्, एक मौखिक दावा, जिसमें यह छवि या पूर्व-आँकड़े देता है, जबकि प्रत्यक्ष भविष्यवाणी दावा करती है। यह मौखिक है.

लेकिन मुझे लगता है कि जब आप पुराने नियम की सामग्री पर विचार करेंगे तो आप पाएंगे कि पुराने नियम में काफी मात्रा में टाइपोलॉजिकल महत्व है। पुराने नियम में ऐसी चीज़ें

हैं जो उस पुराने नियम की संस्था या घटना में सन्निहित सत्य की पूर्ण प्राप्ति की आशा करती हैं। व्याख्या का इतिहास हमें बताता है कि टाइपोलॉजिकल व्याख्या के उपयोग पर उचित परिप्रेक्ष्य रखना मुश्किल है क्योंकि इसकी बहुत सारी ज्यादतियाँ और दुरुपयोग हुए हैं। हम इसके साथ कितनी दूर तक जाते हैं? पुराने नियम की कुछ वास्तविकताओं को नए नियम के कथनों द्वारा स्पष्ट रूप से टाइपोलॉजिकल के रूप में पहचाना जाता है, और वहाँ आपके पास एक बहुत ही ठोस आधार है। लेकिन जब आप उससे आगे जाने लगते हैं, तो आप कितनी दूर तक जा सकते हैं?

बी। टाइपोलॉजी पर मिकेलसन यदि आप मिकेलसन के *इंटरप्रिटिंग द बाइबल* पैराग्राफ ए के तहत पृष्ठ 24 को देखते हैं, तो यह कहता है, “अक्सर टाइपोलॉजी व्याख्या में सनसनीखेजता का बहाना बन जाती है। प्रत्येक ईमानदार दुभाषिया को इस तरह की सनसनीखेजता का दृढ़ता से खंडन करना चाहिए। लेकिन यदि कोई दुभाषिया, ईश्वर के लोगों की एकता के बारे में पूरी तरह से जागरूक है, प्रकार और प्रतिरूप के बीच अंतर के बारे में जागरूक रहते हुए ऐतिहासिक सहसंबंध दिखा सकता है, तो वह निश्चित रूप से ऐसे ऐतिहासिक समानताएं देख सकता है। ऐसी गतिविधि में दुभाषिया को खुद को गंभीर रूप से अनुशासित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि मिकेलसन और अन्य लोग सही ढंग से कह रहे हैं कि आपको अपने आप को केवल उन उदाहरणों तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है जिन्हें बाद के बाइबिल कथनों द्वारा स्पष्ट रूप से टाइपोलॉजिकल के रूप में पहचाना गया है। आप इससे भी आगे जा सकते हैं, लेकिन आपको सावधान रहना होगा कि आप इस व्याख्यात्मक प्रक्रिया का दुरुपयोग न करें।

खतरा रूपक की ओर प्रवृत्ति में निहित है, और मुझे लगता है कि रूपक व्याख्या से बचने का तरीका, जहाँ आप लगभग कुछ भी ले सकते हैं और इसे आध्यात्मिक महत्व दे सकते हैं, यह सुनिश्चित करना है कि प्रकार और प्रतिरूप के बीच पत्राचार अर्थ की एकता को बरकरार रखता है। दूसरे शब्दों में, यह वही सत्य है जो मुक्ति के इतिहास के बाद के चरण में लेकिन उच्च स्तर पर फिर से प्रकट होता है। इसका पूर्ण रहस्योद्घाटन आगे बढ़ता है जहाँ

आपके पास मुक्ति के पहले चरण में कुछ प्रतीकात्मक रूप में सन्निहित सत्य होता है, और यह बाद के इतिहास में फिर से प्रकट होता है। वैध रूप से वह रेखा कौन खींच सकता है ?

सी। टाइपोलॉजी पर वोस इसके साथ ही मैं आपको पृष्ठ 25 की ओर इंगित करता हूँ क्योंकि जो मैंने अभी कहा है वह वास्तव में टाइपोलॉजिकल व्याख्या की वोस की अवधारणा है जहाँ वह प्रतीक और प्रकार के बीच संबंध स्थापित करता है और कहता है कि जो प्रतीक है, वह सत्य वही सत्य है जो टाइप किया गया है . लेकिन ध्यान दें वह कहते हैं, "औपचारिक कानून के कार्य को निर्धारित करने में, हमें इसके दो बड़े पहलुओं, प्रतीकात्मक और विशिष्ट और दोनों के बीच संबंध को ध्यान में रखना चाहिए। एक ही चीज़ को, एक नजरिए से देखा जाए तो, प्रतीकों के तौर पर, और दूसरे नजरिए से देखने पर, प्रकार। एक प्रतीक अपने धार्मिक महत्व में महत्वपूर्ण है जो किसी आध्यात्मिक प्रकृति के किसी निश्चित तथ्य, सिद्धांत या संबंध को दृश्य रूप में गहराई से चित्रित करता है। इसमें जिन चीज़ों को चित्रित किया गया है वे वर्तमान अस्तित्व और वर्तमान अनुप्रयोग की हैं। अगले पैराग्राफ में, "एक विशिष्ट चीज़ संभावित है।" और फिर निम्नलिखित पैराग्राफ, "प्रतीकित चीज़ें और टाइप की गई चीज़ें चीज़ों के अलग-अलग सेट नहीं हैं। वे वास्तव में एक ही चीज़ें हैं, केवल इस संबंध में भिन्न हैं कि वे मुक्ति में विकास के पहले निचले चरण पर आते हैं, और फिर बाद की अवधि में, उच्च चरण पर आते हैं। अगले पैराग्राफ के मध्य में, "केवल यह पता चलने के बाद कि कोई चीज़ क्या प्रतीक है, क्या हम वैध रूप से उस प्रश्न को रखने के लिए आगे बढ़ सकते हैं जो वह दर्शाता है, क्योंकि बाद वाला कभी भी कुछ और नहीं हो सकता है या पूर्व को एक उच्च स्तर पर ले जाया जा सकता है। वह बंधन जो प्रकार और प्रतिरूप को एक साथ रखता है, मुक्ति की प्रगति में महत्वपूर्ण निरंतरता का बंधन होना चाहिए। तो मुझे लगता है कि यही मुद्दा है - प्रकार और प्रतिप्रकार के बीच का पत्राचार। आपके पास प्रतीक में वही सच्चाई हो सकती है जो बाद के प्रकार में फिर से प्रकट होती है।

पृष्ठ 23 पर वापस जाएँ। ध्यान दें कि स्टेक उस दूसरे पैराग्राफ में क्या कहता है। वह इस ओर इशारा कर रहे हैं कि ईश्वर ने इतिहास को इतनी संप्रभुता से व्यवस्थित किया है कि

प्रकार और प्रतिप्रकार के बीच यह पत्राचार कुछ ऐसा है जो डिज़ाइन द्वारा किया गया है। वह कहते हैं, "चूंकि वास्तुकार के मॉडल और रेखाचित्र इमारत के बारे में उसकी स्पष्ट दृष्टि से नियंत्रित होते हैं जो किसी दिन उसके ग्राहक के उद्देश्य को पूरा करेगा, इसलिए मुक्ति इतिहास के भगवान पहले की व्यवस्था में कुछ मामलों को निर्धारित करते हैं जिनके बाद के युग में उनके आदर्श थे।" मुझे लगता है कि वास्तुकार का रूपक एक अच्छा रूपक है। आप शायद कह सकते हैं कि ईश्वर इतिहास का निर्माता है। वह पूरी इमारत को देखता है और इसलिए वह इतिहास में उन वास्तविकताओं का निर्माण कर सकता है जो मुक्तिबोध इतिहास के बाद के चरण में अन्य वास्तविकताओं में उसी सत्य के पुनः प्रकट होने की आशा कर रहे हैं। लेकिन आप देखें तो प्रकार भविष्यवाणी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है। इसे हर तरह से एक भविष्यसूचक कार्य के रूप में देखा जाना चाहिए, जितना कि प्रत्यक्ष भविष्यवाणी, या प्रत्यक्ष मौखिक दावे के रूप में।

डी। रूपक में गिरने का खतरा

अब मैंने कहा कि खतरा रूपक में पड़ने का है जो एक ही सत्य होने के कारण प्रकार और प्रति-प्रकार के बीच पत्राचार खो देता है। मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ। कुछ पुराने चर्च पिता रूपकों में माहिर थे। क्रिसोस्टॉम ने ईसा मसीह के जन्म के समय बेथलहम में हेरोदेस द्वारा शिशुओं के वध के बारे में कहा, "यह तथ्य कि केवल दो साल और उससे कम उम्र के बच्चों की हत्या की गई, जबकि तीन बच्चे संभवतः बच गए, इसका मतलब हमें यह सिखाना है कि जो लोग इसे धारण करते हैं ट्रिनिटेरियन विश्वास को बचाया जाएगा जबकि बिनिटेरियन और यूनिटेरियन निस्संदेह नष्ट हो जाएंगे। अब आप देखते हैं कि वहां आपको, मेरी राय में, एक गाली मिलती है - आप रूपक में पड़ रहे हैं। आप एक ऐसे पाठ में अर्थ ला रहे हैं जिसका पाठ से कोई लेना-देना नहीं है। और यह वह रेखा है जिसे आप पार नहीं करना चाहते हैं, लेकिन यह वह रेखा है जिसे वोस उस प्रणाली से बचाता है जिसे वह टाइपोलॉजिकल व्याख्याओं के साथ दुरुपयोग के लिए सुझाता है।

छात्र प्रश्न:

प्रश्न: तो प्रकार के साथ हम उन स्थितियों के बारे में बात कर रहे हैं, उदाहरण के लिए, जब पुराने नियम में मेमने का वध किया गया रक्त प्रकार मसीह की ओर इशारा करता है क्योंकि उसका रक्त मारा गया था?

प्रतिक्रिया: हां, मुझे लगता है कि यह यहां पूरी तरह से मान्य है - यह बलिदान के खून में वही सच्चाई है, जो बिल्कुल मसीह के खून ने किया था। और जैसा कि इब्रानियों ने बताया है, बैलों और बकरों का खून अंततः प्रायश्चित नहीं कर सकता। यह मसीह के खून की ओर इशारा कर रहा था जिसने इसे प्रभावी बनाया।

जेसन नोटो-मोनिज़ (सं.), केटी टॉमलिंगसन, क्रिस्टिन गॉर्डन, अम्नोनी मायर्स द्वारा लिखित
 मेलिसा स्टीवंस, एरिक हिल्कर
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया